Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :149)

अनुवाद: हे वे लोगो! जो ईमान लाए हो (अल्लाह से) सब्र और नमाज़ के साथ सहायता मांगो। निस्संदेह अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 24

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

29 रमज़ान 1439 हिजरी कमरी 14 इहसान 1397 हिजरी शमसी 7 जून 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

अपनी पांचों समय की नमाज़ों को ऐसे भय और तल्लीनता से पूरा करो कि जैसे तुम परमेश्वर को देख रहे हो और अपने रोज़ों (उपवासों) को ख़ुदा के लिए पूरी सच्चाई के साथ पूरा करो। प्रत्येक जो ज़कात देने के योग्य है वह ज़कात दे और जिस पर हज का दायित्व आ चुका है और इस्लामी सिद्धान्तों को देखते हुए कोई बाधा या रोक नहीं वह हज करे। भलाई को अच्छे रंग में करो, बुराई की उपेक्षा करते हुए उसे तिलांजली दो।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

संसार सहस्त्रों विपत्तियों का स्थान है जिनमें से एक प्लेग भी है । अत: तुम ख़ुदा से सच्चा सम्बन्ध स्थापित करो ताकि वह यह विपत्तियॉं तुम से दूर रखे । कोई विपत्ति या संकट धरती पर नहीं आता जब तक आकाश से आदेश न हो । कोई संकट दूर नहीं होता जब तक आकाश से कृपा न हो। अत: आपकी बुद्धिमत्ता इसी में है कि तुम जड़ को पकड़ो न कि शाखा को। तुम्हें औषधि और उपाय से रोका नहीं है, हां उन पर निर्भर रहने से रोका है। अन्तत: वही होगा जो उसकी इच्छा के अनुकूल होगा। यदि कोई शक्ति रखे तो ख़ुदा पर निर्भर रहने का स्थान सर्वश्रेष्ठ है । तुम्हारे लिए एक अनिवार्य शिक्षा यह है कि क़ुर्आन शरीफ़ को अलग-थलग न डाल दो कि उसी में तुम्हारा जीवन निहित है। जो लोग क़ुर्आन को सम्मान देंगे वे आकाश पर सम्मानित किए जाएँगे। जो लोग हर हदीस और हर वाणी पर क़ुर्आन को प्राथमिकता देंगे उनको आकाश पर प्राथमिकता प्रदान की जाएगी । समस्त मानव जाति के लिए सम्पूर्ण धरती पर अब क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई पुस्तक नहीं और न ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा कोई रसूल और सिफ़ारिश करने वाला। अत: तुम प्रयास करो कि सच्चा प्रेम इस प्रभुत्वशाली नबी के साथ हो। उस पर किसी अन्य को किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता न दो, ताकि आकाश पर तुम्हारा नाम मुक्ति प्राप्त लोगों में लिखा जाए। स्मरण रहे कि मुक्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मरणोपरान्त प्रकट होगी अपितु वास्तविक मुक्ति वह है जो इसी संसार में अपना प्रकाश दिखलाती है। मुक्ति प्राप्त मनुष्य कौन है ? वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा एक वास्तविक सत्य है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके और उसकी प्रजा के मध्य सिफ़ारिश करने वाले हैं। आकाश के नीचे उनके समान न कोई अन्य रसूल है और न क़ुर्आन के समान कोई अन्य पुस्तक है। ख़ुदा ने किसी के लिए न चाहा कि वह सदा जीवित रहे परन्तु यह ख़ुदा की ओर से आया हुआ नबी सदा के लिए जीवित है, और ख़ुदा ने उसके सदा जीवित रहने की नीव इस प्रकार रखी है कि उसकी शरीअत और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्रलय तक जारी रखा और अन्तत: उसकी आध्यात्मिक उपलब्धियों से इस मसीह मौऊद को संसार में भेजा, जिसका आना इस्लामी इमारत को पूर्ण करने के लिए आवश्यक था। अनिवार्य था कि यह संसार उस समय तक समाप्त न हो जब तक कि मुहम्मदी धारा के लिए एक मसीह आध्यात्मिक रूप में न दिया जाता, जैसा कि मूसा की धारा के लिए दिया गया था। यह आयत इसी ओर सँकेत करती है कि-

इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम (अलफ़ातिहा)

मूसा ने वह कुछ प्राप्त किया जिसे प्राचीन पीढ़ियॉं खो चुकी थीं, और हज़रत मुहम्मद साहिब ने वह सब कुछ पाया जिसको मूसा की क़ौम खो चुकी थी। अब मुहम्मदी धारा मूसवी धारा की उत्तराधिकारी है पर प्रतिष्ठा में हज़ारों गुना बढ़कर। मसीले मूसा मूसा से बढ़कर और मसीले इब्ने मरयम इब्ने मरयम से बढ़कर और वह मसीह मौऊद न केवल समय के लिहाज़ से हज़रत मुहम्मद साहिब के बाद चौदहवीं शताब्दी में1 आया था बल्कि उसका प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जबकि मुसलमानों का वैसा ही हाल था जैसा कि मसीह इब्ने मरयम के प्रादुर्भाव के समय यहूदियों का। अत: वह मैं ही हूँ। ख़ुदा जो चाहता है करता है। मूर्ख वह है जो उससे झगड़े और नादान है वह जो उसके समक्ष यह आपत्ति करे कि यों नहीं यों होना चाहिए था। ख़ुदा ने मुझे चमकते हुए निशानों के साथ भेजा है जो दस हज़ार से भी अधिक हैं। इनमें से एक प्लेग भी है। जो मनुष्य सच्चे हृदय से मेरी बैअत करता है और सच्चे हृदय से ही आदेशों का पालन करता है, मेरे आदेशों का पालन करते हुए अपनी समस्त इच्छाओं को त्याग देता है, वही है जिसके लिए इन विपत्तियों के दिनों में मेरी आत्मा उसकी सिफ़ारिश करेगी। अत: वे समस्त लोगो ! जो स्वयं को मेरी जमाअत में शामिल करते हो आकाश पर तुम उस समय मेरी जमाअत में शुमार किए जाओगे, जब वास्तव में सदाचार के मार्गों पर चलोगे ।

शेष पृष्ठ 8 पर

124 वां जलसा सालाना क़ादियान

(जलसा सालाना के आरम्भ पर 125 वां साल)

दिनांक 28, 29, 30 दिसम्बर 2018 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 124 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 28, 29 और 30 दिसम्बर 2018 ई.(शुक्रवार, शनिवार व रविवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद। (नाज़िर इस्लाहो इर्शाद केन्द्रीय)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (भाग -1)

☆ सारी जमाअत की आपस में एकता हो, जमाअत एक जान होनी चाहिए सभी अहमदी मित्रों से मिलें, मुबल्लिग़ों और मुअल्लिमों से भी मिलें, उनका विश्वास भी आप ने प्राप्त करना है, सारा काम एक टीम वर्क के साथ होना चाहिए।

मुबल्लिग़ और जमाअत के बीच प्यार और स्नेह का रिश्ता होना चाहिए, आप ने प्रणाली मज़बूती से स्थापित करनी है और यह भावना सभी रहना चाहिए कि आप उनके हमदर्द हैं आप ने माँ बन कर भी काम करना है और पिता बनकर भी कर काम करना है, अच्छा प्रशासक भी बनना है, मुरब्बी भी बनना है, मुबल्लिग़ भी बनना है और वाक्फे ज़िन्दगी बन भी कर रहना है जमाअत के सदस्यों को एम.टी.ए से Attach करें, सारी जमाअत की आपस में एकता हो, जमाअत एक जान होनी चाहिए, आप ने ख़ुद जमाअत के अंदर एकता पैदा करना है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस मिसरे को कि "बदतर बनो हर एक से अपने ख़याल में " और इस इल्हाम को कि " तेरी विनय पूर्व राहें इस को पसन्द आईं" हमेशा अपने सामने रखें। कार्यकारिणी की मीटिंग हो रही है या कोई दूसरी जमाअत की मीटिंग है और इस दौरान जब नमाज़ का वक़्त आ जाए और यह पता हो कि मुलाकात लंबी होनी है तो पहले नमाज़ पढ़ें और फिर अपनी मीटिंग जारी रखें।

मुबल्लिग़ों अमीरों को हुज़ूर अनवर के सुनहरे निर्देश तथा नसीहतें

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

7 अगस्त 2017 ई सोमवार

जलसा सालाना के अवसर पर जहां विभिन्न देशों से आने वाले प्रतिनिधि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाते हैं वहाँ उन देशों से आने वाले अमीरों, नेशनल सदरों और मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिबान और अन्य जमाअत के पदाधिकारियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के कार्यालय में मुलाकात का सौभाग्य पाते हैं और अपनी इन मुलाकातों में अगले साल के कार्यक्रम, मिशनरी और प्रशिक्षण योजना , मस्जिद, निर्माण गृह और अन्य परियोजनाएं और अन्य देश के मामले और निर्देश प्राप्त करते हैं। आज भी इसी कार्यक्रम के अनुसार कुछ जमाअत के पदाधिकारियों व मुबल्लिग़ों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य पाया। मुलाकातों का यह प्रोग्राम सुबह 10:30 बजे शुरू हुआ।

*सब पहले अमीर साहिब जमाअत अहमदिया मॉरीशस ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य पाया। मुलाकात के दौरान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने रिश्ता नाता के संदर्भ में हिदायत देते हुए फरमाया कि अपने छोटे बच्चों और बच्चियों का प्रशिक्षण करें और उनके लिए अपने विभाग रिश्ता नाता से रिश्ते तलाश करें। अहमदियों के बीच रिश्ता होना चाहिए जो नए अहमदी हैं उनका भी प्रशिक्षण करें ताकि यह भी अपने रिश्ते अहमदी लड़कियों से करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने Rose Hill बिल्डिंग के हवाले से निर्देश देते हुए कहा कि पहले इस बिल्डिंग की Structure Engineering से रिपोर्ट भिजवाएं और फाउंडेशन की जाँच करें। इस रिपोर्ट को पहले भेजें इस के बाद मैं देखूंगा कि क्या फैसला करना है।

मुबल्लिग़ों के मारीशस में वीसा और निवास के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, अपने पब्लिक सम्बन्ध बढाएं। ताकि वीसा को अधिकतम अवधि के लिए बढ़ाया जा सके।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जमाअत जो भी तब्लीग़ी तथा तरबियती प्रोग्राम बनाती है इस में मुबल्लिग़ों को भी शामिल करना चाहिए। और नियमित नियोजन करके कार्यक्रम बनाएं। मिशनरी इन्चार्ज, इस समिति की अध्यक्षता करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब जब अमीर जमाअत के साथ मिलकर कोई प्रोग्राम बनाता है तो फिर आमला के किसी मेम्बर के कहने पर प्रोग्राम तबदील नहीं करना चाहिए। जब एक अमीर निर्णय देता है कि मुबल्लिग़ को ऐसा करना है या करना चाहिए है, तो इसे कार्यान्वित किया जाना चाहिए मुबल्लिग़ों का काम ही तरबियत और प्रशिक्षण है। इस में, मुबल्लिग़ को खुल कर काम करने देना चाहिए अगर उनके रास्ते में कोई बाधा है, तो उन्हें हटाया जाना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: प्रशिक्षण की बहुत आवश्यकता है ख़ुद्दाम के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम होना चाहिए। उन के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मुबल्लिग़ को जोड़ें लजना के प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अमीर साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया, सदर लजना, सचिव प्रचार और सचिव प्रशिक्षण इन सभी के कार्यक्रमों के संदर्भ में नियमित मीटिंग होती रहनी चाहिए। सबसे बड़ी बात तरबियत की है। यदि इस का समाधान हो जाता है, तो अन्य सभी मुद्दे हल हो जाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हर सचिव को अपनी सीमाओं में काम करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आपकी सभी मस्जिदें पांचों नमाज़ों के समय खुली रहनी चाहिए। लोग आए या न आएं परन्तु मस्जिद खुली रहनी चाहिए। लोगों को बताएं के पांचों नमाज़ों के समय में मस्जिद खुली रहती है। प्रत्येक नमाज़ में किसी को निर्धारित कर दें कि वह मस्जिद खोले। वहां तो बूढ़े लोग हैं जो नियमित आ सकते हैं उन को कहें कि आऐं और मस्जिद खोलों। प्रत्येक मस्जिद के लिए एक मस्जिद की सेवा करने वाले को निर्धारित करें जो मस्जिद भी साफ रखे और नमाज़ के लिए मस्जिद भी खोले ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप अमीर की हैसियत में प्रत्येक जमाअत का दौरा करें और प्रत्येक स्थान पर जाएं और देखें कि मस्जिदें समय पर खुलती हैं या नहीं? अमीर साहिब मॉरीशस की मुलाकात 10 बज कर 55 मिनट तक चली।

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

एक मोमिन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश. हज़रत कअब बिन मालिक हज़रत सालिह बिन शुक्रान और हज़रत मालिक बिन दुख़शम रज़ि अल्लाह अन्हुम के जीवन के हालत और सीरत का ईमान वर्धक वर्णन और इस हवाले से जमाअत के लोगों को नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 मई 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज, मैं जिन सहाबा का उल्लेख करूंगा, इन में सबसे पहले अब्दुल्लाह बिन जुहश का ज़िक्र है। आप की माँ उमीमह पुत्री अब्दुल मुत्तलिब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिश्ते में फूफी थीं। इस तरह आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फुफेरे भाई थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अरकम में जाने से पहले ही उन्होंने इस्लाम को स्वीकार कर लिया था।

(असदुल ग़ाबः जिल्द 3 पृष्ठ 89 अब्दुल्लाह बिन जहश प्रकाशन बैरूत 2003 ई)

दारे अरकम वह मकान या केंद्र है जो एक नए मुसलमान अरक़म बिन अरक़म का मकान था और वहां मुसलमान इकट्ठे होते थे। मक्का से थोड़ा सा बाहर था और धर्म सीखने और इबादत आदि करने के लिए एक केंद्र था और इसी प्रतिष्ठा की वजह से इसका नाम दारुस्सलाम के नाम से भी प्रसिद्ध हुआ और यह मक्का में तीन साल तक केंद्र रहा। वहीं ख़ामोशी से इबादत किया करते थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिसें लगा करती थीं और फिर जब उमर रज़ियल्लाहो अन्हो ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो खुलकर बाहर निकलना शुरू किया। रिवायत में आता है कि हज़रत उमर इस इस्लाम के केंद्र में ईमान लाने वाले अंतिम व्यक्ति थे।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 129)

बहरहाल यह केंद्र बनने से पहले ही हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था और फिर रिवायत में आता है कि कुरैश के मुशरेकीन के हाथों अत्याचार से आप का परिवार भी सुरक्षित नहीं था। आप अपने दोनों भाइयों हज़रत अबू अहमद और उबैदुल्लाह और अपनी बहनों हज़रत ज़ैनब बिनत जहश हज़रत उम्मे हबीबा और हमना बिनत जहश के साथ दो बार हब्शा की तरफ हिजरत करके चले गए। उनके भाई उबैदुल्लाह हब्शा जाकर ईसाई हो गए थे और वहीं ईसाई होने की स्थिति में उनकी मृत्यु हुई जबकि उनकी पत्नी हज़रत उम्मे हबीबा बिनत अबू सुफ़यान अभी हब्शा में ही थीं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे निकाह कर लिया।

(असदुल ग़ाबः जिल्द 3 पृष्ठ 89 अब्दुल्लाह बिन जहश प्रकाशन बैरूत 2003 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश मदीना हिजरत से पहले मक्का आए और यहाँ अपने कबीले बनू ग़नम में दोदान के सब लोगों को(जो कि सब के सब मुसलमान हो गए थे) साथ लेकर मदीना पहुँचे उन्होंने अपने रिश्तेदारों से इस तरह मक्का को ख़ाली कर दिया कि मुहल्ला बेरौनक हो गया। और बहुत से मकानों में ताले लग गए।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने साअद जिल्द 3 पृष्ठ 49 अब्दुल्लाह बिन जहश प्रकाशन दारे अहया अत्तुरास अलअरबी बैरूत 1996 ई)

यही अवस्था पाकिस्तान में कुछ स्थानों में अहमदियों की स्थिति है। वहां कुछ गांव खाली हो गए हैं।

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि जब बनु जहश बिन रियाब ने मक्का से हिजरत की तो अबू सुफ़यान बिन हर्ब ने उनके मकान को अम्रो बिन अल्कमह के हाथों बेच दिया। जब यह ख़बर मदीना में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश को पहुंची तो उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात अर्ज़ की इस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हे अब्दुल्लाह क्या तो इस बात से सहमत नहीं है कि ख़ुदा तआला बदला में तुझे स्वर्ग में एक महल प्रदान करे। हजरत अब्दुल्लाह इब्न जुहश ने कहा, "हाँ, हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं प्रसन्न हूं।" तो आपने फ़रमाया तो वह महल तेरे लिए हैं। (सीरत इब्ने हश्शाम बाब हिजरते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत) यानी यह मकान जो तुम ने छोड़े हैं उसकी जगह तुम्हें जन्नतों में जगह मिलेगी वहाँ महल तैयार होंगे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश को नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक जंग में नख़ला घाटी की तरफ भेजा जिसका ज़िक्र पुस्तकों में इस तरह मिलता है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन जब इशा की नमाज़ पढ़ ली तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह इब्न जहश से फरमाया कि तुम सुबह अपने हथियार लगाकर आना तुम को एक स्थान पर भेजना है। इसलिए जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ पढ़ कर बाहर आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश को अपने तीर और तलवार भाला और ढाल सहित अपने घर के दरवाजे पर इंतज़ार करते खड़ा पाया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबी इब्ने कअब को बुलवाया और उन्हें एक पत्र लिखने का आदेश दिया जब वह पत्र लिखा गया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश को बुलाकर इस पत्र को उनके सुपुर्द करते हुए कहा कि मैं तुम्हें इस जमाअत का निगरान निर्धारित करता हूं। जो आप की निगरानी में भेजा गया था। तारीख़ में आता है कि इस से पहले आप ने इस जमाअत पर हज़रत उबैद बिन हारिस को निर्धारित फरमाया था परन्तु रवानगी से पहले जब वह विदा होने के लिए अपने घर गए तो उन के बच्चे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर रोने लगे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश को उन के स्थान पर अमीर बना दिया हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश को भेजते समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन को अमीरुल मोमेनीन का उपनाम रखा। सीरतुल हलिबया में लिखा हुआ है। इस तरह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश पहले भाग्यशाली सहाबी था जिन्हें इस्लाम के दौर में अमीरुल मोमिनीन का उपनाम मिला।

(अस्सीरतुल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 217 जंग हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश नहला वादी की तरफ प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2002 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो आयत يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ की तफसरी में इस घटना का वर्णन इस प्रकार करते हैं कि

"रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मक्का से हिजरत करके मदीना आए तो उसके बाद भी मक्का वालों के जोश तथा क्रोध में कोई कमी नहीं आई बल्कि उन्होंने मदीना वालों को धमकी देनी शुरू कर दीं कि चूँकि तुम ने हमारे आदमियों को अपने यहां शरण दी है इसलिए अब तुम्हारे लिए एक ही रास्ता है कि या तो तुम उन सब को मार दो या मदीना से बाहर कर दो वरना हम कसम खाकर कहते हैं कि हम मदीना पर हमला कर देंगे और तुम सब को कत्ल कर के तुम्हारी महिलाओं को पकड़ लेंगे, और फिर उन्होंने केवल धमिकयों पर ही भरोसा नहीं किया बल्कि मदीना पर हमला करने की तैयारियां शुरू कर दी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इन दिनों में यह स्थिति थी कि कभी-कभी आप सारी-सारी रात जाग कर बिताया करते थे उसी तरह सहाबी रात को हथियार बांधकर सोया करते थे ताकि रात के अंधेरे में दुश्मन कहीं अचानक हमला न कर दे। इन स्थितियों में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक तरफ तो मदीना के निकट बसने वाले

कबीलों से सन्धियां करनी शुरू कर दीं कि अगर ऐसी स्थिति पैदा हो तो मुसलमानों का साथ देंगे और दूसरी तरफ इन ख़बरों की वजह से कि क़ुरैश हमला की तैयारी कर रहे हैं आप ने 2 हिजरी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश को बारह आदमियों के साथ नख़ला भिजवाया और उन्हें एक पत्र देकर इरशाद फ़रमाया कि उसे दो दिन के बाद खोला जाए हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ने दो दिन के बाद खोला तो उसमें लिखा था कि तुम नख़ला में ठहरो और क़ुरैश की स्थिति का पता लगा कर हमें सूचना दो। संयोग था कि उस समय, कुरैश का एक छोटा सा काफिला जो सीरिया से व्यापार करके आ रहा था वहां से गुज़रा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ने व्यक्तिगत इज्तेहाद से काम लेकर उन पर हमला कर दिया जिसके परिणाम में काफिरों का एक व्यक्ति अम्र बिन अलहज़रमी मारा गया और दो गिरफ्तार हुए और लूट का समान भी मुसलमानों ने कब्ज़ा में कर लिया। जब उन्होंने मदीना में वापस आकर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इस घटना का उल्लेख किया तो आप बहुत नाराज़ हुए और फरमाया कि मैंने तुम्हें लड़ाई की अनुमति नहीं दी थी और लूट के सामान को भी स्वीकार करने से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना कर दिया।

इब्ने हरीर ने इब्ने अब्बास की रिवायत से लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश और उनके साथियों से यह ग़लती हुई कि उन्होंने विचार किया कि अभी रजब शुरू नहीं हुआ हालांकि रजब का महीना शुरू हो गया था। वह विचार करते रहे कि अभी तीस जमादी अस्सानी है रजब का आरम्भ नहीं हुआ है। बहरहाल अम्रो बिन हज़रमी का मुसलमानों के हाथों मारा जाना था कि मुशरिकीन ने इस बात पर शोर मचाना शुरू कर दिया कि अब मुसलमानों को उनके पवित्र महीनों का भी सम्मान नहीं रहा जिस में हर प्रकार का युद्ध बंद रहता था। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि "अल्लाह तआला ने इस आयत में इस आरोप को वर्णन करते हुए फरमाया है क कि निसन्देह इस महीने में लड़ाई करना बहुत बुरी बात है और अल्लाह के निकट गुनाह है परन्तु इस से भी बुरी बात यह है कि अल्लाह तआला के रास्ते से लोगों को रोका जाए और ख़ुदा तआला की तौहीद को अस्वीकार किया जाए और मस्जिदे हराम के सम्मान को नष्ट किया जाए और इस के निवासियों को बिना किसी गुनाह के इस लिए के वह एक ख़ुदा पर ईमान लाए हैं अपने घरों से निकाल दिया जाए। तुम्हें एक बात का ख्याल तो आ गया लेकिन तुम ने यह नहीं सोचा कि तुम ख़ुद कितने बड़े अपराध कर रहे हो और अल्लाह तआला और उसके रसूल से इनकार कर के और मस्जिदे हराम की पवित्रता को बातिल कर के उसके रहने वालों को वहाँ से निकाल कर कितने बुरे कर्मों को करने वाले हो गए हो तुम ख़ुद इन अवांछित कर्मों को करने वाले हो गए हो। जब तुम इन बुरे कर्मों के करने वाले हो गए हो तो तुम मुस्लिमों पर किस मुंह से आरोप लगाते हो? इन से जो अनजाने तौर पर एक ग़लती हुई है मगर तुम जानते बूझते हुए यह सब कुछ कर रहे हो।"

(उद्धरित तफसीर कबीर जिल्द 2 पृष्ठ 474-475)

बुख़ारी की एक हदीस की व्याख्या करते हुए हज़रत सैयद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहिब अब्दुल्लाह बिन जहश की जंग के सकारात्मक परिणाम का उल्लेख करते हुए इस के विवरण में लिखते हैं कि इस प्रतिनिधिमंडल को जिस उद्देश्य के लिए रवाना किया गया था उन्हें इसमें पूर्ण सफलता मिली, और उन्हें कुरैश मक्का की परियोजना और उन के आने जाने का बारे में विश्वसनीय जानकारी प्राप्त कीं। हरज़मी के काफिला की घटना एक संयोग तथा इत्तेफाक था कुछ इतिहासकारों ने जो इस राय का वर्णन किया है कि इस वफद के कुछ लोगों को मुहाजेरीन के ग़स्ब किए गए मालों की क्षतिपूर्ति का विचार पैदा हुआ था यह राय सही नहीं बल्कि इस अभियान का मूल उद्देश्य केवल यह था कि हरज़मी वाले काफिले के द्वारा अबू सुफ़यान बिन हर्ब के नेतृत्व में जाने वाले काफिले का उद्देश्य और क़ुरैश मक्का का युद्ध के विषय में योजना की निश्चित जानकारी प्राप्त हो जाऐं और यही काम राज़ से इन लोगों को सौंपा गया था। इसलिए उन्होंने इस छोटे काफिला को अपने कब्ज़ा में लेने का अवसर हाथ से नहीं जान दिया। यह विचार बहुत दूर का है कि वे भेजे तो गए थे क़ुरैश मक्का की युद्ध की तैयारियों से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए, लेकिन उन्होंने काफिले के लूटने पर संतोष कर के आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास वापस होने को पर्याप्त समझ लिया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश बड़े उच्च स्तर के सहाबी थे और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फूफी के पुत्र भी थे। इस अवसर पर आपने इस अभियान के लिए एक भरोसेमंद आदमी को चुना है। जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरैश मक्का की युद्ध की तैयारियों के बारे में ज्ञान हो गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी तैयारी शुरू कर दी और इस तैयारी में पूरी गोपनीयता से काम लिया।

(उद्धरित सहीह अलबुख़ारी अनुवाद तथा तफसीर हज़रत सय्यद ज़ैनुल अबेदीन वली उल्लाह शाह जिल्द 8 पृष्ठ 15 किताबुल मग़ाज़ी प्रकाशन ज़ियाउल इस्लाम प्रैस रबवा)

वह लिखते हैं कि बेशक मग़ाज़ी में ऐसी रिवायतएं आती हैं यानी जो युद्ध की रिवायतें हैं उनमें यह आता है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश और आप के साथियों पर नाराज़गी व्यक्त की लेकिन यह नाराज़गी इस लिहाज से ठीक थी कि उनके अभियान से संबंधित ऐसी स्थिति पैदा हो गई थी जो उपद्रव का कारण बन सकती थी लेकिन कभी-कभी कुछ मामले जो ज़ाहिरी तौर पर हानि वाले मालूम होते हैं अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार जारी होते हैं और कुछ मामूली घटनाएं भव्य परिणाम पर समाप्त होती हैं। अत: अति संभव था कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश का अभियान न भेजा जाता और उनसे जो कुछ हुआ वह न होता और अबू सुफ़यान की अध्यक्षता में शाम से आने वाला काफिला मक्का में बिना किसी ख़तरा के पहुँचता तो क़ुरैश इस काफिले से फायदा उठाकर बहुत बड़ी तैयारी के साथ मुसलमानों पर हमला करते जिसका मुकाबला करना छोटे से असहाय मुसलमानों के लिए कठिन होता लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश की घटना से कुरैश के अभिमानी सरदार आग बबूला हो गए और उसके तैश और अहंकार में जल्दी से वह एक हज़ार सशस्त्र लोगों के साथ, उस जंगल में स्थित स्थान बदर पर पहुंचे ताकि वे अपने काफिला को बचा सकें और उन्हें नहीं पता था कि वहां उन की मौत लिखी है और दूसरी तरफ इस बात की भी संभावना थी कि अगर सहाबा को यह मालूम होता कि एक सशस्त्र सेना के मुकाबला के लिए उन्हें ले जाया जा रहा है उनमें से कुछ झिझक में पड़ जाते। इसलिए गोपनीयता ने इस तरह से काम किया है जो युद्ध में इस प्रकार के मौर्चों में काम आते हैं जिन्हें आज कल के युद्ध में धद्म युद्ध भी कहते हैं।"

(उद्धरित सहीह अलबुख़ारी अनुवाद तथा तफसीर हज़रत सय्यद ज़ैनुल अबेदीन वली उल्लाह शाह जिल्द 8 पृष्ठ 17 किताबुल मग़ाज़ी प्रकाशन ज़ियाउल इस्लाम प्रैस रबवा)

इतिहास में लिखा गया है कि "ख़ुदा और रसूल के प्यार ने उन्हें पूरी दुनिया से बे नियाज़ कर दिया था। यदि उन्हें कोई इच्छा थी तो कवल यह कि किस प्रकार ख़ुदा तआला के मार्ग में जान कुरबान हो जाए। अत: उन की यह इच्छा पूरी हुई। और " अल्मुजद्दअ फिल्लाह" अर्थात ख़ुदा की राह में कान कटा हुआ उन के नाम के प्रमुख चिन्ह हुआ।

(अलसदुल ग़ाब: जिल्द 3 पृष्ठ 90 अब्दुल्लाह बिन जहश प्रकाश दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश के बारे में और अधिक विस्तार की आप की की दुआ किस प्रकार स्वीकार होती है। आप के शहीद होने से पहले की दुआ के स्वीकार होने की घटना प्रसिद्ध है। इस्हाक बिन सअद बिन अबी वकास अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ने मेरे पिता अर्थात सअद से उहद की जंग के दिन कहा आओ अल्लाह से दुआ करें। अत: दोनों एक तरफ चले गए पहले हज़रत सअद ने दुआ की हे अल्लाह जिस समय में कल दुश्मनों से मिलूं तो मेरा मुकाबला इस तरह के आदमी से हो जो हमला करने में कठोर हो और उस का रौब विजयी हो मैं उस से लड़ू और उस को तेरी राह में कत्ल कर दूं और उस के हथियारों के ले लूं इस पर अबदुल्लाह बिल जहश ने आमीन कहा। इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ने यह दुआ की कि हे अल्लाह! कल मेरे सामना ऐसे व्यक्ति से हो जो हमला करने में मुश्किल हो और उसका रौब प्रबल हो इससे मैं तेरे लिए लड़ूं और वह मुझसे लड़ाई करे वह विजयी होकर मुझे कत्ल कर दे और मुझे पकड़ कर मेरी नाक कान काट डाले। तो जब मैं तुम्हारे पास आऊंगा, तो तेरे समाने आऊं तो तू मुझ से पूछो, हे अब्दुल्लाह ! किस रास्ते में तेरी नाक और तेरे दोनों कान काटे गए। मैं निवेदन करूंगा कि तेरी और तेरे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रास्ते में। जवाब में तो कहे, कि तूने सच कहा है। हज़रत साद कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश की दुआ में मेरी दुआ से बेहतर थी। इसलिए कि अंत दिन मैं उनकी नाक और दोनों कानों को देखा कि एक धागे से लटके थे(अलसदुल ग़ाब: जिल्द 3 पृष्ठ 90 अब्दुल्लाह बिन जहश प्रकाश दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई) यानी कटे हुए थे और उन्हें पिरोया हुआ था।

यह क्रूर कार्य था वह जो काफिर करते थे और यही कई बार आजकल भी कुछ चरमपंथी मुसलमान इस्लाम के नाम पर कर रहे हैं।

हज़रत मतलब बिन अब्दुल्लाह बिन हनतब की रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस दिन उहद की ओर रवाना हुए तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शैखैन मदीना के पास एक जगह जहां आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगे उहद के लिए जाते हुए रास्ते में पड़ाव किया और हज़रत उम्मे सलमा एक भुना हुआ बकरी का पैर लाएं जिसे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खाया और इसी तरह नबीज़ (अरब का एक खाना) लाईं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नबीज़ भी पी। फिर एक व्यक्ति ने वह नबीज़ वाला कटोरा ले लिया और उसमें से कुछ पिया। फिर वह प्याला हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश ने ले लिया और उसे समाप्त कर दिया। एक आदमी ने कहा कि मुझे भी कुछ देते जो उस ने कहा तुम जानते हो कि हम कल सुबह कहाँ जाएंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश से कहा हाँ मुझे मालूम है। मुझे अल्लाह इस हालत में मिलना पसन्द है कि मैं सिंचित हूँ(यानी अच्छी तरह खाया पिया हूं) उससे अधिक प्रिय है कि मैं इससे प्यासा होने की स्थिति में मिलूं।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 50 प्रकाश दार अहयाअ अत्तुरास अलअरबी बैरूत 1996 ई)

सहाबा का भी अल्लाह तआला से प्यार का अजीब अंदाज़ है और इसके लिए तैयारी का भी अजीब रंग हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश और हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब को एक ही कब्र में दफनाया गया था। हज़रत हमज़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश के ख़ालू थे और शहादत के समय आपकी उम्र चालीस साल से कुछ अधिक थी। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप के तर्का के वली बने और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके बेटे को ख़ैबर में माल खरीद कर दिया।

(अलसदुल ग़ाब: जिल्द 3 पृष्ठ 90 अब्दुल्लाह बिन जहश प्रकाशक दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश को परामर्श देने वालों में से होने का भी सम्मान प्राप्त था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बद्र से संबंधित जिन सहाबा से सलाह मांगी उनमें आप भी शामिल थे।

(अल्इस्तियाब फी मअरफतिल असहाब जिल्द 3 पृष्ठ 16 अब्दुल्लाह बिन जहश प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जंगे उहद से वापसी पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश की बहन की एक घटना बयान फ़रमाते हैं कि जो इतिहास में इस तरह आई है कि या आप ने अपने शब्दों में इस तरह बयान किया कि "इस युद्ध में अर्थात उहद की लड़ाई में हम देखते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कैसे उच्च हौसला और अपने उच्च नैतिकता का नमूना पेश किया और लोगों के साथ सहानुभूति और दिलजोई की। इस युद्ध की स्थिति से पता चलता है कि आप नैतिकता के कितने उच्चतम स्थान पर खड़े थे और युद्ध में सहाबा की अदभुत कुरबानियों का भी पता चलता है। लिखते हैं कि मैं इस समय बात कर रहा हूँ जब आप युद्ध की समाप्ति पर मदीना वापस जा रहे थे मदीना की औरतें जो आपकी शहादत की खबर सुनकर व्याकुल थीं अब उन्होंने आप के आगमन की ख़बर सुनकर आपके स्वागत के लिए मदीना के बाहर कुछ दूरी पर खड़ी थी। उनमें एक आप की साली हिमना बिनत जहश भी थीं उनके तीन बहुत करीबी रिश्तेदार युद्ध में शहीद हो गए थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उन्हें देखा तो कहा कि अपने मुर्दे पर अफसोस करो। यह अरबी भाषा का एक मुहावरा है जिसका अर्थ यह है कि मैं तुम्हें खबर देता हूं कि तुम्हारा प्रिय मारा गया है। हिमना बिनत जहश ने अर्ज़ किया कि हे रसूलल्लाह किस मुर्दे का अफसोस करूं। आपने फ़रमाया तुम्हारे मामू हमज़ा शहीद हो गए हैं यह सुनकर हज़रत ज़ैनब ने इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि रेजाऊन पढ़ा और फिर कहा अल्लाह उनके स्तर बुलंद करे वह कैसी अच्छी मौत मरे हैं तो आपने फ़रमाया अच्छा अपने एक और मरने वाले का अफसोस कर लो, हिमना ने कहा, "अल्लाह के रसूल कौन?" आपने फ़रमाया तुम्हारा भाई अब्दुल्लाह बिन जहश भी शहीद हो गया है। हिमना ने फिर इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि रेजाऊन पढ़ा और कहा अल्हम्दो लिल्लाह वह तो बड़ी अच्छी मौत मरे हैं। आपने फिर से कहा कि ज़ैनैब अपने एक अन्य व्यक्ति का भी अफसोस कर लो। उसने पूछा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसका? आपने फ़रमाया तेरा पति भी शहीद हो गया यह सुनकर ज़ैनब की आंखों से आंसू बहने लगे और उसने कहा हाय अफसोस। यह देखकर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि देखो महिला को अपने पति के साथ कितना गहरा संबंध होता है जब मैंने ज़ैनब को उसके मामू के शहीद होने की खबर दी तो उसने पढ़ा इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि रेजाऊन। जब मैंने उसे भाई के शहीद होने की खबर दी तो उसने फिर भी इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि रेजाऊन ही पढ़ा लेकिन जब मैंने उसके पति कि शहीद होने के बारे में बताया तो उस ने एक आह भर कर कहा कि हाय अफसोस और वह अपने आंसुओं को रोक न सकी और घबरा गई। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया महिला को ऐसे समय में अपने प्यारे रिश्तेदार और खूनी रिश्तेदार भूल जाते हैं लेकिन उसे प्यार करना पति याद रहता है उसके बाद आप ने ज़ैनब से पूछा तुम ने अपने पति की मृत्यु की ख़बर पर हाय अफसोस क्यों कहा ज़ैनैब ने कहा, "हे अल्लाह के रसूल, मुझे उनके बेटे याद आ गए की उन की कौन निगरानी करेगा।"

(यहां पति का प्यार अपनी जगह। एक प्यार करने वाला पति हो तो बीवी याद रखती है लेकिन बच्चों की चिंता थी उसको उन्होंने व्यक्त किया और इसमें आजकल के मर्दों के लिए भी और औरतों के लिए भी सबक है कि प्यार करने वाले पति बनें और बच्चों का ध्यान रखने वाली माताएं बनें और प्यार करने वाले पति बनने के लिए बीवी और बच्चों के हक अदा करने भी ज़रूरी हैं जिस की आजकल बहुत शिकायतें मिल रही हैं कि हक अदा नहीं हो रहे।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी कैसा सुंदर फरमाया) "आपने हिमना को फ़रमाया कि मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआला उनकी तुम्हारे पति से अच्छा ध्यान रखने वाले कोई आदमी पैदा करे। अत: इसी दुआ का परिणाम था कि हिमना रज़ी अल्लाह अन्हा की शादी हज़रत तलहा के साथ हुई और उनके हाँ मुहम्मद बिन तल्हा पैदा हुए बल्कि तारीख़ों में उल्लेख आता है कि हज़रत तलहा अपने बेटे मुहम्मद के साथ इतना प्यार नहीं करते थे जितना हिमना के पहले बच्चों के साथ करुणामय थे और लोग यह कहते थे कि किसी के बच्चों को इतने प्यार से पालने वाला हज़रत तलहा से बढ़कर और कोई नहीं। और यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ का परिणाम था।"

(उद्धरित मसीबतों के नीचे बरकतों के ख़ज़ाने होते हैं अनवारुल उलूम जिल्द 19 पृष्ठ 56-57)

फिर दूसरा वर्णन हज़रत कअब बिन ज़ैद का है। आपका नाम कअब बिन ज़ैद बिन क़ैस बिन मालिक है कबीला बनो नज्जार से आप का संबंध था। हज़रत कअब रज़ियल्लाहो अन्हो बदर की जंग में हाज़िर हुए और जंग खंदक में शहीद हुए। ऐसा कहा जाता है कि आपको उमय्या बिन रबिया बिन सख़र का तीर लगा था। बेअर मऊना के सहाबा में से हैं जहां इन के सब साथी शहीद हो गए थे वहां केवल आप ही बचे थे।

(अल्इस्तियाब जिल्द 3 पृष्ठ 376 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2002 ई)

बेअर मऊना वह जगह है जहां आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब एक कबीला के कहने पर अपने 70 सहाबा को भेजा जिन में से कई कुरआन के हाफिज़ और कारी थे और उन लोगों ने धोखा से उन सभी को शहीद कर दिया सिवाय हज़रत कअब के और आप भी बेअर मऊना की घटना में इसलिए बचे कि आप उस समय पहाड़ी पर चढ़ गए थे और कुछ रिवायतों के अनुसार कुफ़्फ़ार ने हमला करके आप को भी बहुत अधिक घायल कर दिया था और काफ़िरों ने आप को मृत समझा लेकिन आप उस समय फौत न हुए थे, और इस के कुछ दिनों बाद मदीना पहुंचे और उन को जीवन मिल गया और ठीक हो गए।

(उद्धरित सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 518 से 519)

तीसरा वर्णन हज़रत सालेह शुकरान का है। उनका नाम सालेह था और उपनाम शुकरान था और इसी से आप प्रसिद्ध थे । हज़रत सालेह शुकरान हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफ के हब्शी मूल के ग़ुलाम थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी सेवा के लिए पसंद किया और हज़रत अब्दुर्रहमान से कीमत देकर खरीद लिया और कुछ रिवायतों के अनुसार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ ने बिना किसी बदला के उन्हें आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेंट कर दिया था। हज़रत सालेह शुक्रान बदर की लड़ाई में शामिल थे क्योंकि ग़ुलाम थे आज़ाद नहीं थे इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन का हिस्सा निर्धारित नहीं किया था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सालेह शुकरान

को कैदियों का अभिभावक नियुक्त किया था। हज़रत सालेह शुकरान जिन लोगों के कैदियों की रक्षा करते थे, वह बदले में ख़ुद मुआवज़ा देते थे,(सीरत इब्ने कसीर बाब ज़िक्रे उबैदह पृष्ठ 750 प्रकाशन दारुल कुतब इल्मिया बैरूत 2005 ई) अत: उन्हें जंग के माल से अधिक मिला। जंग में तो कोई हिस्सा नहीं था, लेकिन निगरानी के कारण, उन्हें जंग के माल से अधिक मिला। "बदर की जंग के बाद, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें आज़ाद कर दिया।"

(अलसदुल ग़ाब: जिल्द 3 पृष्ठ 392 प्रकाशक दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

हजरत जाफर इब्न मुहम्मद सादिक कहते हैं कि शुकरान सफ्फा वालों में से थे (हिलयतुल औलिया जिल्द 1 पृष्ठ 348 प्रकाशक अल्ईमान अलमन्सूर: 2007 ई) उन लोगों में से थे जो हर समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़ा पर बैठे रहते थे। हज़रत शुकरान को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नहलाने और दफन करने में भी शामिल थे।

(अलसदुल ग़ाब: जिल्द 3 पृष्ठ 284 शुक्रान प्रकाश दारुल फिक्र बैरूत 2005 ई)

हज़रत इब्ने अब्बास कहते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उन की कमीज़ में ही दफन किया गया और आप की कब्र में हज़रत अली हज़रत फज़ल बिन अब्बास और हज़रत कसम बिन अब्बास और हज़रत शुकरान और औस बिन ख़ौला दाख़िल हुए।

(अस्सुनन अलकुब्रा लिलबहीकी जिल्द 4 पृष्ठ 84 हदीस 7143 मकतबा अर्रशीद रियाज़ 2004 ई)

हज़रत शुकरान इस के बारे में कहते हैं कि अल्लाह तआला की कसम मैंने ही आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नीचे मख़मली चादर बिछाई थी।

(सुनन अत्तिरमज़ी किताबुल जनायज़ हदीस 1047)

सहीह मुस्लिम की रिवायत है के अनुसार वह लाल रंग की मख़मली चादर थी।(सहीह मुस्लिम किताबुल जनायज़ हदीस 2241) यह वह चादर थी कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस को प्रयोग किया करते थे। अत: हज़रत शुकरान वर्णन करते हैं कि मैंने इस बात को पसन्द न किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई दूसारा ओढ़े क्योंकि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस चादर को ओढ़ते और बिछाया भी करते थे।

(अल्मिनहाज बे शरह सहीह मुस्लिम इमाम नौवी पृष्ठ 749 हदीस 967 प्रकाशन दारे इब्ने हज़म 2002 ई)

जंग मुरसीया के अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत शुकरान को कैदियों और मुरसीया वालों के कैम्प से जो माल दौलत जानवर आदि मिले थे इस पर निगरान बनाया।(इमताअ अल असमाअ जिल्द 6 पृष्ठ 316 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 1999 ई) आप बड़े भरोसा वाले थे इस लिहाज़ के निगरानी किया करते थे उन के बारे में वर्णन मिलता है कि हज़रत उमर ने हज़रत शुकरान के बेटे अब्दुर्रहमान बिन शुकरान को हज़रत अबू मूसा की तरफ रवाना किया और लिखा कि मैं तुम्हारी तरफ एक नेक आदमी अब्दुर्रहमान बिन सालेह शुकरान जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम थे को भेज रहा हूं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट इन के पिता का सम्मान को ध्यान में रखते हुए व्यवहार करना।

(अलसदुल ग़ाब: जिल्द 5 पृष्ठ 31 अब्दुर्रहमान बिन शुक्रान प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 2003 ई)

यह वह स्थान था जो इस्लाम ने ग़ुलामों को भी दिया न केवल ग़ुलामी से आज़ाद किया बल्कि इन की औलादें भी सम्मान योग्य ठहरीं। एक रिवायत है कि हज़रत शुकरान ने मदीना में निवास किया और आप का एक घर बसरा में था हज़रत उमर के ख़िलाफत के समय में आप की वफात हुई।

(अलसदुल ग़ाब: जिल्द 3 पृष्ठ 285 अब्दुर्रहमान बिन शुक्रान प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 2005 ई)

अगला उल्लेख है हज़रत मालिक बिन दहश्म का है उनका संबंध कबीला खज़रज के परिवार बनो ग़नम बिन औफ से था। आप की एक बेटी थीं जिनका नाम फुरैया था।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 282 मालिक बिन अद्दहशम प्रकाशन दार अहया अत्तुरास बैरूत 1996 ई)

इस बारे में उलेमा मतभेद करते हैं कि क्या हज़रत मालिक बिन दहश्म बैअत उकबा में शरीक हुए थे या नहीं। इब्ने इसहाक और मूसा इब्न उकबा के निकट आप शामिल हुए थे। बहरहाल यह उलमा की बहस चलती ही रहती है। हज़रत मालिक बिन दुहश्म जंग बद्र, जंग उहद जंग खंदक और उसके बाद की सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे।

(अल्इस्तेयाब जिल्द 3 पृष्ठ 405-406 मालिक बिन दहशम प्रकाश दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 2002 ई)

सुहैल बिन अमरो कुरैश के बड़े और सम्मानित नेताओं में से थे वह जंगे बद्र में मुशरिकीन की तरफ से शामिल हुए थे उन्हें हज़रत मालिक बन दुहश्म ने बंदी बनाया।

रिवायत में आता है कि आमिर बिन सअद अपने पिता हज़रत साद बिन अबी वक़ास से रिवायत करते हैं कि मैंने जंग बद्र के दिन सुहैल बिन अमरो को तीर मारा जिससे उनकी नस कट गई थी मैं बहते हुए खून के पीछे चलता गया। मैंने देखा कि हज़रत मलिक बिन दुहशम ने उन्हें माथे के बालों से पकड़ा हुआ था। मैंने कहा यह मेरा कैदी है मैंने यह तीर मारा था लेकिन हज़रत मालिक ने कहा कि यह मेरा कैदी है मैंने उसे पकड़ा है तो वह दोनों सुहैल को लेकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुहैल को इन दोनों से ले लिया और रोहा के स्थान पर सुहैल हज़रत मालिक बन दुहश्म हाथ से निकल गया। हजरत मलिक ने लोगों में ज़ोर से आवाज़ लगाई और उनकी तलाश में खड़े हो गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस अवसर पर फरमाया कि जिसे भी वह मिलता है उसे मार डाला जाना चाहिए। युद्ध के लिए आए थे। मुसलमानों से लड़ाई की थी। कैदी बने तो वहां से निकल गए फिर खतरा पैदा हो सकता था कि बहरहाल जंगी कैदी थे इस लिए यह आदेश हुआ लेकिन उनका जीवन बचना था सुहैल बिन अमरो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ही मिला बजाय किसी और को मिलते लेकिन जब मिला तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे कत्ल नहीं किया। अगर किसी और सहाबी के हाथ चढ़ जाते तो कत्ल कर देते लेकिन चूंकि वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिला इसलिए आप ने कत्ल नहीं किया।"

(यह आदर्श है और आप का यह आदर्श जवाब है उन अत्याचारियों को जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह आरोप लगाते हैं कि आप ने अत्याचार किया और कत्ल किया कि कत्ल का जो सज़ावार था वह भी जब आप को नज़र आया जिस के लिए फैसला भी हो चुके थे आप ने उसे कत्ल नहीं किया।) "एक रिवायत के अनुसार सोहेल नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कीकर के पेड़ों के झुंड में मिला था आप ने आदेश दिया कि इस को पकड़ लो और इस के हाथ इस की गर्दन के साथ बांध दिए गए। अर्थात कैद कर लिया गया।"

(तारीख़ दमिश्क ले इब्ने असाकर जिल्द 12 भाग 24 पृष्ठ 333 सुहैल बिन अमरो प्रकाशन दारुल अहया अत्तुरास अरअरबी बैरूत)

सहीह बुख़ारी में यह रिवायत है कि हज़रत इतबान बिन मालिक जो कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उन अंसार सहाबा में थे जो बदर में शरीक हुए थे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा हे रसूलल्लाह मेरी नज़र कमज़ोर हो गई मैं अपनी क़ौम को नमाज़ पढ़ाता हूँ जब बारिशें होती है तो इस नाले में जो मेरे और उनके बीच है बाढ़ आ जाती है और उनकी मस्जिद में आकर उन्हें नमाज़ नहीं पढ़ा सकता। हे रसूलुल्लाह मेरी इच्छा है कि आप मेरे पास आएं और मेरे घर में नमाज़ पढ़ें और मैं इसे एक मस्जिद बना दूंगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इंशा अल्लाह मैं आऊँगा। वह कहते थे कि एक दिन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो सुबह जिस समय दिन चढ़ा मेरे यहाँ आए और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अनुमति मांगी मैंने आप को अनुमति दी जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर आए तो बैठे नहीं बल्कि फरमाया कि आप

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

अपने घर में कहाँ चाहते हो कि मैं नमाज़ पढ़ूँ? वह कहते हैं मैंने घर के एक कोने की ओर इशारा करते हुए कहा यहाँ मैं चाहता हूं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए वहाँ खड़े हो गए वहाँ नमाज़ पढ़ी और अल्लाहो अकबर कहा और हम भी खड़े हो गए और पंक्ति बांध ली। आपने दो रकअत नमाज़ पढ़ीं और फिर बधाई दी। रवि कहते हैं कि हमने आपको खज़ीरा गोशत और आटा या रोटी या रोटी से बना जो खाना होता है वह पेश करने के लिए रोक लिया जो हम ने आपके लिए तैयार किया हुआ है। रावी कहते हैं कि घर में पड़ोस के कुछ और आदमी इधर उधर से आ गए जब वे इकट्ठे हो गए तो उनमें से किसी कहने वाले ने कहा कि मालिक बन दहश्म कहां है? तो उनमें से कुछ ने कहा कि वह एक मुनाफिक है, अल्लाह और उसके रसूल से प्यार नहीं करता है। शायद न आने के कारण, वह क्षेत्र में रहते थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया यह मत कहो क्या तुम इसे नहीं देखते कि वह ला इलाहा इल्लल्लाह को स्वीकार करता है अल्लाह की रज़ामंदी ही चाहता है। व्यक्ति ने कहा, "अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं।" तब उसने कहा कि हम तो उसका ध्यान और मुनाफिकों के लिए अधिक देखते हैं।" (शायद दिल की नरमी के कारण वे चाहते होंगे कि मुनाफिकों को भी प्रचार करें और उन्हें इस्लाम के करीब लाएं इसलिए सहानुभूति भी रखते होंगे और इस वजह से सहाबा में ग़लतफहमी पैदा हो गई तो) आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह ने बेशक उस व्यक्ति पर आग हराम कर दी है जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह स्वीकार किया बशर्ते वह इस स्वीकार करने से अल्लाह की रज़ामंदी चाहता हो।"

(सहीह बुख़ारी किताबुस्सलात हदीस 425)

तो यह जवाब है उन तथाकथित उल्मा को भी जो कुफ्र के फतवे लगाने वाले हैं और विशेष रूप से अहमदियों पर इस संबंध में अत्याचार करने वाले हैं। इन तथा कथित उल्मा के अपने फत्वों ने ही मुस्लिम देशों की शांति और समृद्धि को बर्बाद कर दिया है। पाकिस्तान में जो संगठन आजकल चल रहा है, लब्बैक या रसूलुल्लाह वे नारे तो लगाते हैं। लब्बैक या रसूलल्लाह लेकिल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह इरशाद है कि जो ला इलाहा इल्लल्लाह कहता है उसे भी तुम यह मत कहो कि मुसलमान नहीं है। अगर वह अल्लाह को ख़ुश करना चाहता है तो अल्लाह ने उस पर आग हराम कर दी है। और यह कहते हैं कि तुम लोग अल्लाह की इच्छा चाहते हुए नहीं कहते दिलों का हाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के से अधिक कौन जानने वाला है। अल्लाह तआला इन लोगों से क़ौं को बचा कर रखे।

एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत इतबान बिन मलिक ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हज़रत मालिक बिन दहश्म कपटी हैं जिस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क्या वह ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही नहीं देता। इतबान ने जवाब दिया क्यों नहीं, लेकिन इसका कोई सबूत नहीं है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा क्या वह नमाज़ नहीं पढ़ता।? उन्होंने कहा क्यों नहीं वला सलात लहू लेकिन उसकी नमाज़ कोई नहीं है। (शायद उन में भी कुछ लोगों में यह आजकल के कुछ मौलवियों की तरह सख्ती थी।) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यही वे लोग हैं जिनके बारे में अल्लाह तआला ने मुझे अपनी ओर से किसी प्रकार की राय स्थपित करने से मना फरमाया है।

(अलसदुल ग़ाब: जिल्द 4 पृष्ठ 230 मालिक बिन अद्दहशम प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 2003 ई)

केवल ख़ुदा तआला ही दिल को जानता है।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तो अल्लाह तआला ने मना फरमा दिया लेकिन इन उलमा को और विशेष रूप से पाकिस्तानी उलमा को के उन के कथन के अनुसार उनके पास यह प्रमाणपत्र लाइसेंस है कि अल्लाह के नाम पर जो चाहें अत्याचार करते रहें।

हज़रत अनस बिन मालिक रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने हज़रत मालिक बन दहश्म को बुरा भला कहा गया तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ला तसबो असहाबी। तुम मेरे साथियों को बुरा मत कहो।

(अल्इस्तेयाब जिल्द 3 पृष्ठ 406 मालिक बिन अद्दहशम प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2002 ई)

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग तबूक से वापसी पर मदीना से थोड़ी दूरी पर एक जगह ज़ो अवाना में ठहरे तो आप को मस्जिद ज़रार के बारे में वह्यी नाज़िल हुई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मालिक बन दहश्म और हज़रत मअन बिन आदि को बुला भेजा और उन्हें मस्जिद ज़रार की तरफ जाने का आदेश दिया। हज़रत मालिक बन दहश्म और हज़रत मअन बिन अदी तेज़ी से कबीला बनो सालिम पहुंचे जो कि हज़रत मालिक बन दहश्म का कबीला था। हज़रत मालिक बन दहश्म ने हज़रत मअन से कहा कि मुझे कुछ समय दो यहाँ तक कि मैं घर से आग ले आऊँ तो वह घर खजूर की सूखी टहनी को आग लगाकर ले आए फिर वे दोनों मस्जिद ज़रार गए और एक रिवायत के अनुसार मग़रिब और इशा के बीच वहां पहुंचे और वहां जाकर उसे आग लगा दी और उसे ज़मीन से मिला दिया।

(शरह ज़रकानी अला मवहेबुर्रहमानी अल्लदुनिया जिल्द 4 पृष्ठ 97-98 अध्याय ग़ज़वा तबूक दारुल कुतब बैरूत)

तो किसी ग़लत फहमी की वजह से हम सहाबा पर शंका नहीं कर सकते। जिन के बारे में कुछ लोगों की यह धारणा थी कि शायद यह गलत रास्ते पर चले हुए हैं यहां तक कि उन्हें पाखंडी भी कह दिया लेकिन बाद में मुनाफिक के केंद्र को विनाश करने वाले बने और इसे अल्लाह तआला के आदेश से समाप्त करने वाले बने।

अल्लाह इन सहाबा के स्तर ऊंचा करता चला जाए और हमें भी अपनी समीक्षा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे कि क्या अल्लाह तआला के आदेश हैं और किस हद तक हम उन्हें पूरा करने वाले हैं।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

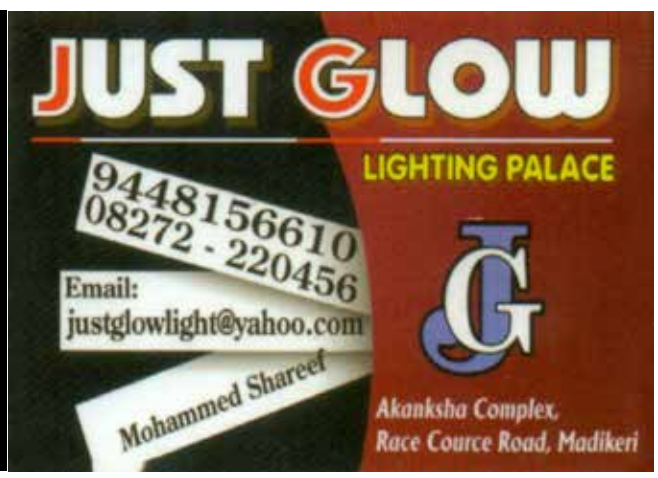

पृष्ठ 2 का शेष

इस के बाद अमीर जमाअद अहमदिया युगांडा ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की। अमीर साहिब ने और अधिक मुबल्लिग़ तथा मुअल्लिमों की ज़रूरत का वर्णन किया। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फरमाया: लोकल रूप से अपने मुअल्लेमीन शिक्षित करें और उनके लिए तीन साल का कोर्स शुरू करें।

मस्जिदों की स्थापना की बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पांच-पांच मस्जिदों की योजना बनाएं जब पांच पूरी हो जाएं तो अगली पांच बनाएं। मुअल्लेमीन के लिए प्रत्येक मस्जिद के साथ एक छोटा सा मिश्न हाऊस भी बनाएं।

अमीर साहिब ने यूगेण्डा के अन्दर जमाअत के स्कूल की ज़रूरत का भी वर्णन किया इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जो भी स्कूल आप खोलना चाहते हैं इन का नियमित प्लान बना कर मुझे भिजवाऐं।

तब्लीग़ी प्रोग्राम के हवाला से अमीर साहिब यूगेण्डा को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि जो भी अहमदी हो रहे हैं वे ईमान में मज़बूत होने चाहिए।

यूगेण्डा में जमाअत की एक बहुत बड़ी ज़मीन है जिस का नाम रब्वा रखा हुआ है। इस ज़मीन के हवाले से अमीर साहिब ने कुछ मामले पेश फरमाए । इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि रब्वा की ज़मीन के बारे में अलग प्रोजेक्ट बना कर मुझे भिजवाएं फिर मैं बताऊंगा कि क्या करना है। अमीर साहिब यूगेण्डा की यह मुलाकात 11 बज कर 10 मिन्ट तक जारी रही।

इस के बाद अमीर जमाअत अहमदिया कांगो कन्शासा जो पहले बोरकीना फासो के मुबल्लिग़ थे। और अभी अभी उन का तबादला अमीर जमाअत अहमदिया कांगो कन्शासा हुआ है। उन्होंने दफतरी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया और कान्गो कन्शासा जाने से पहले हिदायतें लीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जाकर सारे अहमदियों से मिलें। मुबल्लिग़ और जमाअत के मध्य मुहब्बत और प्यार का रिश्ता होना चाहिए। वहां जाकर सारी समीक्षा करें और वहां हमेशा विनय शील बन कर रहना। ये भी देखना की जो भी समस्याएं हैं वे क्यों हैं? क्यों पैदा हो रही हैं फिर इस कारण को खत्म कर के इस को दूर करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया वहां सारे मुबल्लिग़ तथा मुअल्लिमों से भी मिलें। उन का भरोसा भी आप ने प्राप्त करना है और उन को हिक्मत से बताना है कि आप को प्रत्येक अवस्था में सहयोग करना है। सारा काम एक टीम वर्क के साथ होना चाहिए। मुबलि्लग़ों के साथ मीटिंगें करें। और स्थानीय मुअल्लिमों के साथ मीटिंगें करें। और उन्हें बताएं कि हम ने टीम वर्क करना है।

हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फरमाया कि पहले समस्याओं को देखें कि कहां कहां और क्या क्या समस्याएं हैं। उन को समझें और फिर उन को हल करने की कोशशि करें? यह न देखें कि हम ने पहले क्या काम करना है और किस प्रकार करना है। समस्याओं को हल करना हमारा उद्देश्य है इसी को सामने रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जो जमाअत के उहदेदार हैं उन की अवस्था यूरोप या अफ्रीका के दूसरे देशों की तरह नहीं हैं। जब उन को पहले उहदेदार बनाते हैं और फिर उन को हटाते हैं तो वे विरोध शुरु कर देते हैं। इस की समीक्षा करनी है कि इस का क्या कारण है। और किस प्रकार ठीक करना है। इन सारी बातों की समीक्षा करें और इन का हल निकालें। आप ने निज़ाम मजबूती से स्थापित करना है और यह अनुभव सब को रहना चाहिए कि आप इन के सहानुभीति करने वाले हैं आप ने मां बन कर भी काम करना है और बाप बनकर भी काम करना है अच्छा प्रशासन करने वाला भी बनना है मुरब्बी भी बनना है मुबल्लिग़ भी बनना है और वाक्फे ज़िन्दगी बन कर भी रहना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के इस इल्हाम को हमेशा सामने रखें कि "तेरी विनय की राहें उस को पसन्द आईं।" वहां आप स्थानीय लोगों से भी प्यार करेंगे तो आप की सब समस्याएं हल हो जाऐंगी और सारे काम आसान हो जाऐंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया हर एक मुरब्बी से अलग मीटिंग भी करनी है और फिर एक साथ भी मीटिंग भी करनी है। मुबल्लिग़ीन के साथ आपनी सारी माटिंगों की समीक्षा सामने रखें और फिर इस समीक्षा के अनुसार अपनी प्लानिंग करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फरमाया। आमला के साथ भी मीटिंग करें। इन को भरोसा में लें। उन को बताएं कि उहदेदार बनना ही उन का काम नहीं है इस लिए उहदे नहीं दिए गए। आमला के प्रत्येक मेम्बर से उस की विभाग की स्कीम लें। या उन का अगर इतना अनुभव नहीं है तो फिर को ख़ुद स्कीम बना कर दें। तरबियत का विभाग है तहरीक जदीद है, वक्फे जदीद है इन सब विभागों की स्कीमें तैय्यार होनी चाहिए। फिर तब्लीग़ का विभाग है। तब्लीग़ की भी स्कीम बनाएं। पिगम्स जनजाति में प्रचार का अभियान शुरू हो गया है। उन क्षेत्रों में प्रचार के कार्य को बढ़ाएं। वहां प्राथमिक स्कूल खोलने के लिए कहें, इसकी समीक्षा करें। यदि आप प्राथमिक स्कूल की योजना बना सकते हैं जाने से पहले, अगर बन सकता है तो बना लें। जाने से पहले दफ्तर तब्लीग़ में कांगो की फाइल भी देख सकते हैं तो देख लें हैं और वहां के जो पूर्व अमीर या मुबल्लिग़ इन्चार्ज हैं उन के साथ भी मीटिंग कर लें और हालात का पता कर लें। उन के साथ मीटिंग बेशक कर लें परन्तु आप ने ख़ाली ज़हन हो कर जाना है। उन की सारी बातें सुन लें परन्तु मुश्किलों का हल आप ने ख़ुद ही तलाश करना है। समीक्षा आप ने ख़ुद ही करनी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया वहां स्कूलों की समीक्षा भी कर लें। क्लिनिक पर भी एक नज़र डालें अगर आप वहां बना सकते हैं, तो मुझे बताएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मॉडल गांव का भी कार्यक्रम बनाया था। इस की समीक्षा करें और काम करें। सरकार से सम्पर्क बनाने हैं। जन संपर्क को बढ़ाना है। राजनेताओं के साथ संबंध बढ़ाना है हर जगह सामाजिक बन कर रहें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने सारी मोटी मोटी हिदायतें दे दी हैं। वहां जाकर समीक्षा करें। फिर अपनी रिपोर्ट भेजें। फिर यहां से अधिक निर्देश प्राप्त हो जाएंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आपको हमेशा नम्र होना चाहिए और नम्रता के साथ काम करना चाहिए। एक अधिकारी बनकर काम न करें "बदतर बनो हर एक से अपने ख़्याल में" यह अब भी याद रखें और तीन साल बाद भी याद रखना है।

*इसके बाद कांगो कनशासा के पूर्व अमीर मुबल्लिग़ इन्चार्ज जिनकी पोस्टिंग कागों से माली में हुई उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने महोदय को हिदायत देते हुए फरमाया "आप सबसे पहले अमीर बनकर रहे हैं अब ग़रीब बनकर रहें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। असली चीज़ वक्फे ज़िन्दगी है आप वाक्फे ज़िन्दगी हैं और एक वक्फ की रूह के साथ अपना काम जारी रखें। हमेशा विनम्रता और विनय को धारण करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का यह इल्हाम हमेशा आप के सामने हो कि" तेरी विनय की राहें इस को पसन्द आईं।" माली में अमीर जमाअत की पूर्णता इताअत करें। कोई अच्छा परामर्श हो तो ज़रूर दें लेकिन जब निर्णय हो जाए तो फिर पूर्ण आज्ञाकारिता होनी चाहिए। बाकी अल्लाह मालिक है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: घरेलू परिस्थितियों की वजह से जो समस्याएं और कठिनाइयां कांगो में हैं वहाँ जाने वाले मुबल्लिग़ को बताएँ और जिन परियोजनाओं पर काम चल रहा है उनके विषय में भी उन्हें बता दें।

*इसके बाद मुबल्लिग़ इन्चार्ज ग्याना ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से दफतरी मुलाकात का सौभाग्य पाया। मुबल्लिग़ इन्चार्ज गयाना ने अर्ज़ किया कि वेनेज़ुएला में जमाअत के दृष्टि कोण से ग्याना के तहत है। एक मुबल्लिग़ है, लेकिन आज वेनेजुएला की स्थिति ख़राब है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हालात हमेशा ख़राब नहीं होंगे। कुछ हफ्तों के बाद, जब ठीक हो जाते हैं, तो मुबल्लिग़ ग्याना भेज देंगे। ग्याना जाकर आप के साथ काम करें। फिर, कुछ समय बाद, यदि स्थिति बेहतर हो तो ग्याना से वेनेज़ुएला चले जाए। उसके बाद मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब ने निवेदन किया कि ग्याना की एक जमाअत लिंडन के लिए भी मुबल्लिग़ भिजवाएं। वहां तब्लीग़ की बहुत से अवसर हैं।

प्रारंभिक इन्चार्ज ने कहा कि हम ह्यूमेनटी फर्सट के तहत ग्याना में भी काम

करना चाहते हैं। कंप्यूटर स्कूली, आंखों की देखभाल और स्वच्छ पेय जल की ज़रूरत है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: चिकित्सा शिविर आयाजित करें और समाचार पत्रों में रिपोर्ट प्रकाशित करें। यह इस्लाम के संदेश को व्यक्त करने का रास्ता भी खोल देगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, हमने आँखों के 100 आप्रेशन के साथ वहां काम शुरू कर दिया है और धीरे धीरे यह संख्या में वृद्धि हुई है। अब हज़ारों आपरेशन चल रहे हैं, अब एक आकर्षक अस्पताल भी है।

महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की सेवा में टीवी पर प्रसारित प्रमुख कार्यक्रमों की गतिविधियों के लिए मार्गदर्शन का अनुरोध किया। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि कोई भी काम करने से पहले उस के बारे में समीक्षा की जाती है। यहां तक कि बिस्कुट बनाने वाली फैक्ट्रीयां भी पहले समीक्षा करती हैं कि क्या हमारे बिस्कुट को लोग पसन्द करेंगे या नहीं। इस के बाद ही वह अपना उत्पाद बनाती हैं। इसी तरह आप ने पहले अपने देश के हालात और ज़रूरत और लोगों के रुजहान के अनुसार समीक्षा करनी है। और फिर कोई प्रोग्राम बनाना है।

मुबल्लिग़ ने अर्ज़ किया कि हम ने मसीह हिन्दुस्तान में के विषय पर प्रोग्राम किए हैं। इस पर लोगों ने पसन्द किया है कुछ लोगों ने विरोध भी किया है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जिन चीज़ों में लोग दिलचस्पी दिखाएं वे जारी रखें। फिर कुछ समय बाद विषय बदल दें क्योंकि लोगों का दिल भर जाता है। विरोध से घबराना नहीं बल्कि हिक्मत के साथ पैग़ाम पहुचाएं और अगर फिर भी विरोध हो तो डरना नहीं घबराना नहीं। पहले पढ़े लिखे लोगों को इकट्ठा करें और उन तक सन्देश पहुंचाएं।

मुबल्लिग़ ने कहा: क्या हम कनाडा से ख़ुद्दाम को वक्फे आरज़ी की तहरीक कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह अच्छी बात है। कनाडा और अमेरिका से भी ख़ुद्दाम को वक्फे आरज़ी की तहरीक करें।

तब्लीग़ के बारे में हिदायत देते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: लोगों को सीधी तब्लीग़ न करें क्योंकि कई बार सीधा तब्लीग़ करने से लोग नहीं आते क्योंकि लोग न तो धर्म पर अनुकरण करते हैं और न ही धर्म में उन्हें कोई दिलचस्पी होती है। इस लिए सीधा तब्लीग़ न किया करें। पहले माहौल बनाऐं फिर बातचीत करते हुए धर्म की चर्चा पर ले आएं। पहले केवल सम्पर्क बढाएं और अपने निकट लाएं। शान्ति संगोष्ठी करें। अगर ख़िलाफत के बारे में कोई बात करनी है तो आई एस एस का उदाहरण देकर करें कि देखें उस ख़िलाफत का क्या बना। साल में एक दो बार शान्ति संगोष्ठी करें। जिस में पढ़े लिखे वर्ग को बुलाएं। अख़बार में ख़बरें भी छपवाएं। इस तरह अधिक लोगों तक सन्देश पहुंचेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अपने जन सम्पर्क बढाएं। मेम्बर आफ पार्लियामेन्ट, पुलीस चीफ कमीशनर डाक्टरों वकीलों इत्यादि से सम्पर्क बनाऐं। लोग का दिल जीतने के लिए खर्च करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ये सब बातें धीरे-धीरे होती हैं। महान धैर्य और प्रोत्साहन वाला काम है। किसी को धर्म से दूर करना बहुत आसान काम है।

प्रशिक्षण के बारे में मुबल्लिग़ ने कहा कि कुछ अहमदियों के ग़ैर-अहमदियों से दोस्तियां हैं जिस के कारण से अनैतिक कार्य भी हो जाते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: प्रशिक्षण के लिए जो कुछ भी अलग तरीके भी धारण कर सकते हैं करें। अफ्रीका में परंपरा भी है कि अपनी आदिवासी परंपराओं के अनुसार शादी कर लेते हैं और एक साथ रहने लग जाते हैं। आप कम से कम उन्हें निकाह की तरफ ध्यान दिलाएं।

मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि रिश्ता नाता के बारे में भी कई समस्याएं हैं पड़ोसी देश सोरीनाम और ट्रीनीडाड से रिश्ते करवाने का एक प्रस्ताव है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: देखें जो भी नए रास्ते निकलते हैं निकालें। अन्तर्राष्ट्रीय रिश्ता केंद्र समिति से भी संपर्क कर सकते हैं।

पर्दा की समस्या के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए फरमाया पहले सिर और शरीर ढांपने का बताऐं इस से शुरू करें। धीरे धीरे आगे बढ़ें। पहले इंसान बनाना है इंसान से चरित्र वाला इंसान और चरित्र वाले इंसान से ख़ुदा वाला इंसान बनाना है।

मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि वहां लोग बैअत फार्म साइन करने से घबराते हैं केवल इस्लाम स्वीकार करना चाहते हैं अगर ज़ोर लगाऐं तो अस्थायी तौर पर बैअत कर लेते हैं मगर बाद में पीछे हट जाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस प्रकार के लोगों की एक अलग लिस्ट बनाएं जो जमाअत के साथ तो हैं परन्तु अभी बैअत फार्म साइन नहीं किया। इन को माली कुरबानी में भी शामिल करें। थोड़ा बहुत चन्दा लें। तब्शीर को इस प्रकार के लोगों की सूचि भिजवा दें कि ये लोग हैं जिन्होंने अभी तक बैअत फार्म नहीं भरे। परन्तु इस प्रकार के लोगों को जमाअत का हिस्सा बनाना चाहिए।

पम्फैलट के बांटने के बारे में हुज़ूर अनवर ने फरमाया केवल पम्फैलट बांटने ही नहीं बल्कि नए तरीके निकालें। पढ़े लिखे नौजवानों को लें। और इन को जमाअत का सन्देश पहुंचा दें। अपने सम्बन्ध बढ़ाऐं नेताओं से मिलें। उन से सम्पर्क रखें और विभिन्न अवसरों पर उन को उपहार भिजवाएं। इसी तरह से ग़रीबों का भी ध्यान रखें। और उन की सहायता भी करते रहें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया यह बहुत लम्बा काम है धैर्य धारण किए रखना थकना नहीं थक गए तो हार गए।

मुबल्लिग़ ने निवेदन किया के कुछ लोग बैअत कर के कुछ समय बाद वापस चले जाते हैं। इन का जमाअत के साथ सम्बन्ध किस प्रकार स्थापित कर सकते हैं ?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया इस प्रकार के लोगों का अस्थायी जोश होता है। इस लिए इस प्रकार के तरीके तलाश करें इन का जोश क़ायम रहे। नए प्रोग्राम हों। पहले कुछ महीने तरबियत करें निगरानी करें और फिर बैअत फार्म भरवाएं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया जमाअत के लोगों की एम टी ए से जोड़ें। सारी जमाअत का आपस में एकता हो। जमाअत एक जान होनी चाहिए। आप ने ख़ुद जमाअत के अन्दर एकता पैदा करनी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के इस पंक्ति को " बद तर बनो हर एक से अपने ख़याल में" और इस इल्हाम को " तेरी विनम्र राहें उसे पसन्द आईं।" हमेशा अपने सामने रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जमाअतों में एम टी ए का प्रबन्ध होना चाहिए। वरना मेरी तकरीरों की रिकार्डिंग इत्यादि होनी चाहिए। लोगों को इस का आदी बनाएं इस प्रकार ख़िलाफत से सम्बन्ध मज़बूत होगा।

इस के बाद प्रोग्राम के बाद मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब श्रीलंका ने हुज़ूर अनवर से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मुबल्लिग़ श्रीलंका ने कहा है कि श्रीलंका में कई क्षेत्रों में मोटरसाइकिल पर जाना पड़ता है। सवारी करने का कोई रास्ता नहीं है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ श्रीलंका के मुबल्लिग़ों को इन शर्तों के साथ आज्ञा प्रदान की कि हेलमेट पहन कर चलाएं और सभी सावधानियों को सामने रखेंगे। रफतार अधिक न रखेंगे। धीरे चलाएं।

श्रीलंका में एक बड़ी संख्या पाकिस्तान से आने वाले अहमदी लोगों की भी है। इन के इज्तिमा के प्रोग्राम के हवाले से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया के ख़ुद्दाम के नेशनल इज्तिमा एक ही होगा। जिस में पाकिस्तान से आने वाले ख़ुद्दाम भी शामिल होंगे। इल्मी मुकाबलों के लिए दो वर्ग बना लें। अर्थात पाकिस्तान से आने वाले ख़ुद्दाम के मुकाबले अलग हों और स्थानीय ख़ुद्दाम का इल्मी मुकाबला अलग हो। क्योंकि दोनों की भाषाएं अलग हैं। परन्तु जो खेलों की मुकाबले होंगे वे एक साथ होंगे। सब मिल कर हिस्सा लेंगे। जैसो अगर क्रिकेट की दो टीमें बनानी हैं तो दोनों टीमों में पाकिस्तानी और श्रीलंका के ख़ुद्दाम शामिल होंगे।

तरबियत के हवाला से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया तरबियत के लिए घरों में जाया करें। अगर किसी स्थान पर सुलह करवानी है आपस में मतभेद हैं तो फिर वहां पर खाना पीना नहीं। किसी को यह न लगे आपका एक पक्ष की तरफ झुकाव अधिक है। जिस प्रकार भी हो सके सुलह करवाओ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया जैली तंज़ीमों के काम में कोई रोक पैदा नहीं होनी चाहिए। ख़ुद्दाम में अपने तौर पर काम करना है इसी प्रकार अंसार और लजना ने भी अपने तौर पर काम करना है अपने अपने ज़ैली प्रोग्राम आयोजित करने हैं।

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार पाकिस्तान से आने वाले कुछ केन्द्रीय उहदेदारों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इन उहदेदारों में नाज़िर साहिब ज़यापत सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान और सेक्रेटरी सय्यदना बिलाल कमेटी शामिल थे।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार आज शाम सवा पांच बजे विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के मित्रों और परिवारों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुईं। आज 35 परिवारों के 175 लोगों और इसके अलावा 20 दोस्तों ने व्यक्तिगत रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इस तरह, संपूर्ण 195 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

मुलाकात करने वाली यह परिवारों में निम्नलिखित 22 देशों से आए थे। पाकिस्तान, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, स्पेन, दुबई, अबू धाबी, यू.के, भारत, जर्मनी, बांग्लादेश, नाइजीरिया, नीदरलैंड, स्वीडन, आइसलैंड, बोलीविया, मैक्सिको, जमैका , इंडोनेशिया, फिलीपींस, आयरलैंड और स्विटजरलैंड।

उनमें से प्रत्येक अपने पसंदीदा आक़ा के साथ तस्वीर बनाने में का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्राओं तथा छात्रों को कलम प्रदान किए और छोटे बच्चों को चाकलेट प्रदान किए। मुलाकातों का यह कार्यक्रम शाम पौने नौ बजे रात तक जारी रहा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में आकर नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाए। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

8 अगस्त 2017 ई मंगलवार

8 से 15 अगस्त 2017 ई को केन्द्रीय प्रतिनिधि, उमरा किराम, नेशनल सदरो, मुबल्लिग़ इन्चार्जों और अन्य जमाअत के पदाधिकारियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ दफतरी मुलाकातों का कार्यक्रम जारी रहा। मुलाकात करने वालों ने इन मुलाकातों में अगले साल के कार्यक्रम, अपने प्रचार प्रसार, प्रशिक्षण योजनाएं और तब्लीग़ी मंसूबों, मस्जिदों, मिशन गृहों और केंद्रों के निर्माण के लिए निर्देश, और अपने स्वयं के देश या संगठन से संबंधित अन्य योजनाओं और मामलों के संदर्भ में, निर्देश प्राप्त किए।

8 अगस्त दिनांक मंगल को यह मुलाकातों का यह कार्यक्रम सुबह 10.30 बजे शुरू हुआ। आदरणीय नायब नाज़िर साहिब रिश्ता नाता, आदरणीय अफसर साहिब खज़ाना और आदरणीय नाज़िर साहिब तालीम रब्वा ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से दफतरी मुलाकातों का सौभाग्य प्राप्त किया। और विभिन्न मामलों को पेश कर के हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मार्ग दर्शन प्राप्त किया

इस के अतिरिक्त एडीशनल वकीलुत्तसनीफ साहिब लंदन, एडीशनल वकीलुल माल साहिब लंदन एडीशनल वकीलुत्तबशीर साहिब लंदन और डायरेकटेर आफ प्रोडेकशन एम टी ए इन्ट्रनेशनल ने भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने भी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया और विभिन्न मामले पेश कर के हिदायतें प्राप्त कीं।

मुलाकातों का यह प्रोग्राम पौने दे बजे तक जारी रहा। इस के बाद दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में तशरीफ लाकर नमाज़ जुहर तथा अस्र अदा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने निवास में पधारे।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार आज शाम सवा पांच बजे विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के मित्रों और परिवार की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुईं। आज 34 परिवार के 170 सदस्यों और इस के अतिरिक्त 15 लोगों ने व्यक्तिगत रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इस तरह समग्र रूप से 185 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाकात करने वाले यह परिवार निम्नलिखित 16 देशों से आए थे। पाकिस्तान, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, दुबई, अबू धाबी, यूके, भारत, जर्मनी, नाइजीरिया, आइवरी कोस्ट, नाइजर, गिनी कनाकरी, इटली, शारजाह और घाना।

उनमें से प्रत्येक अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दीं। मुलाकातों का यह कार्यक्रम शाम पौने नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में आकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर पधारे।

9 अगस्त 2017 दिन बुधवार

आज नियम अनुसार आदरणीय वकील साहिब तामीलो तंफीज़ (बराए भारत, नेपाल और भूटान) और आदरणीय निजी सचिव साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से दफतरी मुलाकात का सौभाग्य पाया और विभिन्न मामलों को प्रस्तुत करके निर्देश प्राप्त किए। कार्यालय की मुलाकातों का यह कार्यक्रम सुबह 10:30 बजे तक चलता रहा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में आकर नमाज़ ज़ुहर तथा असर पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर पधारे।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार आज शाम सवा पांच बजे विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के मित्रों और परिवारों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुईं। आज, 26 परिवारों के 130 लोगों और 21 अन्य सदस्यों हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की थी। इस प्रकार 151 लोगों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाकात करने वाली यह परिवार निम्नलिखित 17 देशों से आई थीं। पाकिस्तान, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, भारत, जर्मनी, स्वीडन, गयाना, कांगो, घाना, फिनलैंड, तुर्कमेनिस्तान, बेलीज, कुवैत, फ्रांस, मस्कट और ओमान। उनमें से प्रत्येक अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दीं। मुलाकातों का यह कार्यक्रम शाम पौने नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में आकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर पधारे।

10 अगस्त 2017 ई जुम्मेरात

और सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला विभिन्न दफतरी मामलों में व्यस्त रहे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने दफतर की डाक देखी। और विभिन्न मामलों के बारे में हिदायत फरमाई।

दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में ज़ुहर और असर की नमाज़ जमा कर के अदा की। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थल पर पधारे।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार आज शाम सवा पांच बजे विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के मित्रों और परिवारों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ से मुलाकात शुरू हुईं। आज, 28 परिवारों के 240 लोग, और इसके अतिरिक्त, 18 लोगों ने व्यक्तिगत रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया इस प्रकार 158 लोगों को मुलाकात का सौभाग्य मिला। मुलाकात करने वाले यह परिवार निम्नलिखित 19 देशों से आए थे। पाकिस्तान, अमेरिका, स्पेन, कनाडा, फ्रांस, दुबई, अबू धाबी, यूके, भारत, जर्मनी, घाना, बेल्जियम, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, आयरलैंड, फिनलैंड, तंजानिया, सेनेगल, उरुग्वे और केन्या

उनमें से प्रत्येक अपने प्यारे आक़ा के साथ एक तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दीं। मुलाकातों का यह कार्यक्रम शाम पौने नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में आकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर पधारे।

11 अगस्त 2017 ई जुमअतुल मुबारक

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय में विभिन्न मामलों में व्यस्त रहे। एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुल फुतूह पधार कर ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फरमाया और जुम्अ: की नमाज व अस्र की नमाज़ जमा करके पढ़ाई। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ मस्जिद फज़ल पधारे।

कादियान से आने वाले प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार शाम साढ़े पांच बजे कादियान (भारत) से आने वाले केंद्रीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इस साल कादियान (भारत) से नाज़रान, नायब नाज़रान, ज़ैली संगठनों (मजलिस अंसारुल्लाह लजना इमाअल्लाह और मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया) के प्रतिनिधि, मुबल्लिग़ सिलसिला, मुअल्लिम सिलसिला और अन्य जमाअत के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों पर आधारित 19 लोगों का केंद्रीय प्रतिनिधिमंडल जलसा सालाना यूके में शामिल हुआ था। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने अपने प्रिय आक़ा के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया और एक हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। कार्यक्रम के अनुसार, 12 अगस्त को अगले दिन प्रतिनिधिमंडल को भारत लौटना था।

नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फज़ल में तशरीफ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

कश्मीर दूर है या आसमान ?

जमाअत अहमदिया के प्रसिद्ध मुबल्लिग़ मौलाना अबुल अता साहिब जालन्धरी अपने जीवन की एक घटना का वर्णन करते हुए लिखते हैं :-

"इसी ज़माने में जब मैं फ़िलस्तीन में था (1931-1936) एक बार एसी घटना हुई कि नाबलस शहर के कुछ अध्यापक मेरे पास मिलने के लिए कबाबीर में आए। कबाबीर करमल पहाड़ पर हैफ़ा के निकट एक गांव है जिसमें अल्लाह की कृपा से सारे अहमदी ही रहते हैं इस गांव में जमाअत अहमदिया का केन्द्र भी है, मस्जिद भी है, मदरसा भी है और इसी जगह से मासिक पत्रिका 'अलबुश्रा' भी जारी थी। मस्जिद के साथ एक कमरा मैंने मुबल्लिग़ के लिए तैयार किया हुआ था और जिन दिनों मैं कबाबीर में होता था मैं इसी कमरे में रहता था। नाबलस के यह अध्यापक मिलने के लिए इसी कमरे में बैठे थे और उस समय उस कमरे में कुछ अहमदी लोग भी थे जिनमें हज़रत शेख़ अली अलकज़क़[रज़ि.] भी थे जो सूफ़ी थे और बूढ़े भी थे पहले शतलीया सम्प्रदाय में शामिल थे अधिक पढ़े लिखे न थे पर बहुत धार्मिक व नेक थे। नाबलस के अध्यापकों में से एक ने, जबकि मैं उनके लिए चाय बना रहा था हम से पूछा कि आप हज़रत ईसा[अ.] की मृत्यु स्वीकार करते हैं मैंने कहां हां क़ुर्आन से यही प्रमाणित है। इस पर उन्होंने पूछा कि फिर उनकी कब्र कहां है मैंने उत्तर दिया कि क़ब्र कश्मीर (भारत) में है। उस अध्यापक ने उसी समय प्रश्न किया कि हज़रत मसीह तो फ़िलस्तीन में थे फिर कश्मीर में इतनी दूर कैसे चले गए और वहां उनकी क़ब्र कैसे बन गई इस प्रश्न का मैं अभी उत्तर न देने पाया था कि शेख़ अली अलक़ज़क़ (मृतक) उसी अध्यापक को सम्बोधित करते हुए बोले कि "या उस्ताज़ु अल कानत बिलादुल कश्मीराती अबअद मिनस्समाई अर्थात् हे अध्यापक क्या कश्मीर आसमान से भी अधिक दूर है ? उन का तात्पर्य यह था कि आप लोग हज़रत ईसा[अ.] का आसमान पर जाना तो स्वीकार करते हैं परन्तु कश्मीर जाने पर इसलिए हैरान हो रहे हो कि वह (कश्मीर) दूर है हालांकि कश्मीर धरती पर ही है और आसमान से दूर नहीं है इस उत्तर को सुनते ही सारे अध्यापक वाह-वाह करने लगे और कहने लगे कि बहुत उत्तम उत्तर है एक ने मुझे कहा कि आपने अहमदियों को बहुत पढ़ाया है मैंने कहा कि इस बारे में मेरे पढ़ाने का कोई भी प्रभाव नहीं है यह तो अल्लाह तआला की तरफ से समय पर सिखा दिया जाता है वर्ना मैंने तो ख़ुद ही इस उत्तर के बारे में कुछ सोचा न था।"

(हयाते ख़ालिद पृष्ठ - 314)

D.T.P केंद्र नज़ारत नश्रो इशाअत कादियान मैं एक कंप्यूटर ऑपरेटर चाहिए।

(नोट: यह घोषणा केवल लजना के सदस्यों के लिए है।)

D.T.P केंद्र नज़ारत नश्रो इशाअत में लेडीज़ कम्पयूटर ऑपरेटर बिल्मुक्ता खाली रिक्त साथान को भरने की ज़रूरत है। लज्ना की उम्मीदवार कवायफ फार्म नज़ारत दीवान से प्राप्त करके उसे पूरा करने के बाद अपने आवेदन शैक्षिक प्रमाणपत्र प्रतियां attested के साथ अमीर पार्टी, सदर जमअत,सदर लजना की पुष्टि के साथ 2 महीने के अंदर भिजवा दें। जज़ाकमुल्लाह

शर्तें: (1) उम्मीदवार की शिक्षा न्यूनतम 2+ (सेकंड डिवीज़न) हो, हिंदी, उर्दू लिखना पढ़ना जानती हो

(2) कंप्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा किया हो।

(3) In-Design, MS-Word और In-Page के बारे में बुनियादी जानकारी हो

(4) हिन्दी, उर्दू टाइपिंग में कुशल और कम से कम एक साल का अनुभव हो

(5) टाइपिंग Key Board देखे बिना कर सकती हो, एक घंटे में कम से कम 300 शब्दों लिख सकती हो

(6) हिंदी टाइपिंग In-Design सॉफ्टवेयर Chanakya Unicode फ़ॉन्ट करना जानती हो और इसी तरह उर्दू टाइपिंग In-Page सॉफ्टवेयर करना जानती हो।

(7) वक्फे जीवन वक्फ नौ तहरीक में शामिल होने वाली सदस्य अपना संदर्भ संज़ूरी वक्फे नौ और वक्फे नौ भी आवेदन में लिखें

(8) आवेदन में अपने पिता, पति, अभिभावक के पुष्टिकरण के हस्ताक्षर भी हूँ।

(9) उम्मीदवार को साक्षात्कार की तिथि से बाद में सूचित किया जाएगा, साथ ही कादियान साक्षात्कार के लिए आवाजाही का खर्च ख़ुद वहन करने होंगे

(10) कादियान में आवास की जिम्मेदारी उम्मीदवार की अपनी होगी।

सदर अंजुमन अहमदिया में ड्राईवर के रूप में सेवा करने वाले ध्यान दें।

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में ड्राईवर की आसामी भरी जानी है जो दोस्त ड्राईवर के रूप में सेवा करने के इच्छुक हैं वे अपने आवेदन 2 महीने के अंदर नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अंजुमन अहमदिया में भिजवा सकते हैं।

शर्तें: (1) उम्मीदवार के पास ड्राइविंग लाइसेंस और ड्राइविंग का अनुभव होना चाहिए

(2) उम्मीदवार के लिए शिक्षा की कोई शर्त नहीं है

(3) उम्मीदवार को बर्थ सर्टिफिकेट पेश करना आवश्यक होगा

(4) वही ड्राइवर सेवा के लिए लिए जाएंगे जो नूर अस्पताल कादियान से मेडिकल फिटनेस प्रमाण पत्र के अनुसार स्वस्थ और ठीक होंगे

(5) वही उम्मीदवार सेवा के लिए लिए जाएंगे जो साक्षात्कार बोर्ड नियुक्त कार्यकर्ताओं में सफल होंगे।

(6) उम्मीदवार ड्राइवर को दर्जा द्वितीय के बराबर भत्ता तथा अन्य सुविधाएं दी जाएंगी

(7) उम्मीदवार के कादियान आवाजाही की लागत अपने होंगे

(8) यदि उम्मीदवार का चयन होता है तो कादियान में अपने आवास का उसे ख़ुद प्रबन्ध करना होगा।

(नोट: प्रस्तावित आवेदन फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से प्राप्त कर लें, आवेदन फार्म भर कर आने पर उसके अनुसार कार्रवाई होगी)

(नाज़िर दीवान कादियान)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदीया कादियान

मोबाइल: 09815433760 कार्यालय: 01872-501130

ई-मेल: nazaratdiwanqdn@gmail.com

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 14 June 2018 Issue No. 23

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

रमज़ानुल मुबारक के साथ

तहरीक जदीद की गहरी समानताएं

तहरीक जदीद के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि अल्लाह तआला अन्हो तहरीक जदीद के साथ रमज़ान की समानताओं का वर्णन करते हुए फरमाते हैं

" अगर तुम रमज़ान से लाभ उठाना चाहते हो तो तहरीक जदीद पर अनुकरण करो। अगर तहरीक जदीद को लाभ पहुंचाना चाहते हो तो रोज़ों से सहीह लाभ उठाओ। तहरीक जदीद यही है कि सादा जीवन व्यतीत करो और मेहनत और कुरबानी का अपने आप को आदी बनाओ। यही शिक्षा रमज़ान तुम्हें सिखाने के लिए आता है अत: जिस काम के लिए रमज़ान आया है उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कोशिश करो..... प्रत्येक आदमी को कोशिश करनी चाहिए कि इस का रमज़ान तहरीक जदीद वाला हो और तहरीक जदीद रमज़ान वाली। रमज़ान हमारे नफस को मारने वाला हुआ और तहरीक जदीद हमारी रूह को ज़िन्दगी देने वाली हुई। अत: जब मैंने कहा कि रमज़ान से लाभ उठाओ तो वास्तव में मैंने तुम्हें समझाया कि तुम तहरीक जदीद के उद्देश्यों को रमज़ान के आलोक में समझो। और जब मैं ने कहा कि तहरीक जदीद की तरफ ध्यान दो तो दूसरे शब्दों में मैंने तुम्हें कहा कि तुम प्रत्येक अवस्था में अपने ऊपर रमज़ान की अवस्था तारी करो और सहीह कुरबानी और निरन्तर कुरबानी की आदत डालो। जो रमज़ान बिना सच्ची कुरबानी के गुज़र जाता है वह रमज़ान नहीं और जो तहरीक जदीद बिना रूह की ताज़गी के गुज़र जाती है वह तहरीक जदीद नहीं।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 4 नवम्बर 1938 ई)

हुज़ूर अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

" रमज़ान के जो अन्तिम दस दिन हैं इन को तहरीक जदीद के बारे में पहले की कुरबानियों के लिए शुक्रिया और भविष्य के लिए खर्च करो। जिन को पिछले सालों में कुरबानी की तौफीक मिली वह इसके लिए अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें और प्रत्येक दुआ करने वाला अल्लाह तआला से दुआ करे कि उस ने धर्म के सम्मान के लिए सिलसिला की मज़बूती के लिए जो कुरबानी की हुई है उस के नतीजा में अल्लाह तआला उस पर अपने फज़ल और रहमतें नाज़िल करे और उसके लिए अपनी मुहब्बत और बरकतों को नुज़ूल फरमाए। इसी मुहब्बत और श्रद्धा के अनुसार जिस के साथ उस ने ख़ुदा की राह में कुरबानी की थी।"

(अलफज़ल 15 नवम्बर 1938 ई पृष्ठ नम्बर 4)

जमाअत के मुख़लेसीन का आरम्भ से यह तरीका रहा है कि वे हमेशा आधे रमज़ान तक अपने तहरीक जदीद के वादों को शत प्रतिशत अदा कर के अल्लाह तआला के फज़लों को अपने अन्दर सूखने की कोशिश करते हैं अत: सारे दोस्तों से निवेदन है कि वह 20 रमज़ान मुबारक कर अर्थात 5 जून तक अपने वादों को पूरा अदा करने की कोशिश कर के हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के स्वीकृत दुआओं के वारिस बनें। अल्लाह तआला हम सब को इस की तौफीक प्रदान फरमाए। आमीन।

(वकीलुल माल तहरीक जदीद)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

अत: अपनी पांचों समय की नमाज़ों को ऐसे भय और तल्लीनता से पूरा करो कि जैसे तुम परमेश्वर को देख रहे हो और अपने रोज़ों (उपवासों) को ख़ुदा के लिए पूरी सच्चाई के साथ पूरा करो। प्रत्येक जो ज़कात देने के योग्य है वह ज़कात दे और जिस पर हज का दायित्व आ चुका है और इस्लामी सिद्धान्तों को देखते हुए कोई बाधा या रोक नहीं वह हज करे। भलाई को अच्छे रंग में करो, बुराई की उपेक्षा करते हुए उसे तिलांजली दो। निसन्देह स्मरण रखो कि सदाचाररहित कोई भी कर्म ख़ुदा तक नहीं पहुंच सकता। प्रत्येक भलाई की जड़ सदाचार है। जिस कर्म में यह जड़ नष्ट नहीं होगी वह कर्म भी व्यर्थ नहीं जाएगा। अनिवार्य है कि शोक और विपत्तियों से तुम्हारी परीक्षा भी हो, जिस प्रकार तुम से पूर्व ख़ुदा पर आस्था रखने वालों की परीक्षा हुई। अत: सावधान रहो। ऐसा न हो कि ठोकर खाओ। धरती तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती यदि तुम्हारा आकाश से अटूट नाता है। तुम जब भी अपना नुकसान करोगे तो अपने ही हाथों से करोगे न कि शत्रु के हाथों से। यदि तुम्हारा सांसारिक सम्मान पूर्णतया जाता रहे तो ख़ुदा तुम्हें आकाश पर वह सम्मान प्रदान करेगा जो कभी कम न हो । अत: तुम ख़ुदा को मत छोड़ो। आवश्यक है कि तुम्हें दुख दिया जाए और तुम्हारी अनेकों आशाओं पर पानी फिर जाए। पर इन समस्त परिस्थितियों में तुम निराश मत हो, क्योंकि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारी परीक्षा लेता है कि तुम उसके मार्ग में हढ़ हो या नहीं। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर फ़रिश्ते भी तुम्हारी प्रशंसा करें तुम मार खाओ और प्रसन्न रहो, गालियां सुनो और आभार प्रकट करो, असफलता देखो पर ख़ुदा से नाता मत तोड़ो । तुम ख़ुदा की अन्तिम जमाअत हो। अत: ऐसे सुकर्म करो जो अपने गुणों के लिहाज़ से सर्वोत्तम हों। प्रत्येक जो तुम में आलसी हो जाएगा वह एक अपवित्र वस्तु की भांति जमाअत से बाहर फेंक दिया जाएगा और हसरत से मरेगा पर ख़ुदा का कुछ न बिगाड़ सकेगा। देखो मैं बड़ी प्रसन्नता से यह संदेश देता हूँ कि तुम्हारा ख़ुदा वास्तव में विद्यमान है, यद्यपि कि सब को उसी ने पैदा किया है, पर वह उस मनुष्य को चुन लेता है जो उस को चुनता है। वह उसके निकट आ जाता है जो उसके निकट आता है, जो उसे सम्मान देता है वह उसको भी सम्मान देता है ।

1. हाशिया:: यहूदी अपने इतिहासकी दृष्टि से यही स्वीकार करते आए हैं कि मूसा के चौदहवीं सदी के सिर पर प्रकट हुआ था देखो यहूदियों का इतिहास। इसी में से।

(रूहानी ख़जायन भाग 19 किश्ती नूह पृष्ठ 13 - 15)

☆ ☆ ☆

अपनी औलाद की नेक तरबियत पर विशेष ध्यान दें।

उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़

अपनी औलाद की नेक तरबियत पर विशेष रूप से ध्यान दें। उन को नेक नमूना पेश करें। अभी कुछ दिनों तक इन्शा अल्लाह रमज़ान का बरकतों वाला महीना शुरू होने वाला है। यह नेकी और रूहानी तरबियत का सर्वोत्तम मार्ग है। इस में इबादत और नेक कामों का अभ्यास होता है। जिन पर रोज़े फर्ज़ हैं उन्हें कोई बहाना नहीं वे रोज़े रखें। फर्ज़ नमाज़ों और नफल का प्रबन्ध करें और दुआओं पर ज़ोर दें। कुरआन करीम की अधिक से अधिक तिलावत करें। बच्चों से कुरआन करीम का पूर्ण दौर करवाएं। और फिर इन नेक बातों को रमज़ान के बाद भी जारी रखें। अल्लाह तआला आप सब को अनुकरण करने की तौफीक प्रदान करें।

(अख़बार बदर उर्दू कादियान 8 दिसम्बर 2016 ई पृष्ठ 2)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad